

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, रहस्योद्घाटन और शास्त्र, सत्र 4, ईश्वर को जानना और धर्मशास्त्र के स्रोत

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा प्रकाशितवाक्य और पवित्र शास्त्र पर दिए गए उनके शिक्षण का विषय है। यह सत्र 4 है, ईश्वर को जानना और धर्मशास्त्र के स्रोत।

हम प्रकाशितवाक्य के सिद्धांतों, ईश्वर द्वारा स्वयं को ज्ञात करना, और विशेष रूप से पवित्र शास्त्र के सिद्धांतों में अपना अध्ययन जारी रखते हैं, जो हमारे पाठ्यक्रम का सबसे बड़ा हिस्सा है।

कृपया मेरे साथ प्रार्थना में शामिल हों। पिता, हम आपको अपनी रचना में, मानवीय विवेक में, इतिहास में, और फिर अपने पुत्र के अवतार में विशेष रहस्योद्घाटन में, और सबसे खास तौर पर अपने वचन में खुद को हमारे सामने प्रकट करने के लिए धन्यवाद देते हैं। हमें प्रोत्साहित करें, हमें सुधारें, और हमें अपने अनन्त मार्ग पर ले जाएँ; हम यीशु मसीह के माध्यम से प्रार्थना करते हैं, जो नई वाचा का मध्यस्थ है। आमीन।

ईश्वर और धर्मशास्त्र में हमारे स्रोतों को जानना। कभी-कभी, सोला स्क्रिप्टुरा की सुधार अवधारणा को गलत समझा जाता है।

सुधार ने सोला स्क्रिप्टुरा, सोला ग्रेटिया का समर्थन किया, जिसका अर्थ है कि केवल अनुग्रह ही हमें बचाता है, न कि हम जो कुछ भी कर सकते हैं उसमें अनुग्रह। सोला फ़ाइडेई का अर्थ है केवल विश्वास, न कि विश्वास और काम। सभी कार्य महत्वपूर्ण हैं, लेकिन वे विश्वास का प्रमाण और सबूत हैं।

इन्हें ईश्वर को स्वीकार्य बनाने के लिए विश्वास में नहीं जोड़ा जाता है। सोला स्क्रिप्टुरा, सोला ग्रेटिया, सोला फ़ाइडेई, सोलस क्रिस्टस, केवल मसीह ही दुनिया का उद्धारकर्ता है; बचाए जाने के लिए व्यक्ति को उस पर विश्वास करना चाहिए। सोला देओ ग्लोरिया, केवल ईश्वर को ही महिमा प्राप्त है।

सोला स्क्रिप्टुरा का अर्थ कभी-कभी गलत समझा जाता है कि बाइबल ही एकमात्र स्रोत है जिसका उपयोग हम अपने धर्मशास्त्र के लिए करते हैं। यह सच नहीं है। हम बाइबल का अध्ययन करने में निश्चित रूप से तर्क का उपयोग करते हैं, और चाहे हम इसे महसूस करें या न करें, हम अपने अनुभव से प्रभावित होते हैं, अच्छे या बुरे के लिए, और हम धर्मशास्त्र के रूप में एक निश्चित परंपरा में खड़े होते हैं, लेकिन सोला स्क्रिप्टुरा का मतलब यह नहीं है कि बाइबल ही हमारा एकमात्र स्रोत है।

इसका मतलब है कि बाइबल ही हमारा मुख्य स्रोत है, और यह अन्य स्रोतों के निर्णय में शामिल है। जिस तरह से मैं इसे कहना चाहता हूँ वह यह है कि हमारा लक्ष्य जानबूझकर और लगातार हमारे तर्क, हमारी परंपरा और हमारे अनुभव पर शास्त्र को ऊंचा उठाना है। बाइबिल की कहानी

और एक ईसाई विश्वदृष्टि हमें अपने धर्मशास्त्र में बढ़ने के लिए मजबूर करती है, जैसा कि हमने देखा है, और स्पष्ट करती है कि हम इसे कैसे समझते हैं और इसके बारे में कैसे सोचते हैं।

लेकिन हमारे पास कौन से स्रोत हैं जो हमें अपने धर्मशास्त्र को विकसित करने में मदद करते हैं? धर्मशास्त्र का अध्ययन करते समय, हम चार स्रोतों से सीखते हैं: शास्त्र, परंपरा, तर्क और अनुभव। मैं इन चारों के माध्यम से काम करना चाहता हूँ और हमें बाइबल की शिक्षाओं, यानी धर्मशास्त्र का अध्ययन करते समय उनके और उनके स्थान के बारे में सोचना चाहता हूँ। शास्त्र, जैसा कि हमने ऊपर बाइबिल की कहानी से जो रेखांकित किया है, उससे स्पष्ट है, शास्त्र सभी धर्मशास्त्रों का मुख्य स्रोत है।

जैसा कि हम आगे देखेंगे, धर्मग्रंथ ईश्वर द्वारा अद्वितीय रूप से प्रेरित है, इसलिए यह ईश्वर का वचन है, और सभी विश्वास और व्यवहार के लिए सर्वोच्च अधिकार है। जब हम धर्म में अधिकार के बारे में बात करते हैं, तो हमारा मतलब है कि जिसे सत्य सिखाने और हमारी आज्ञाकारिता का आदेश देने का अधिकार है। और हम कहते हैं कि धर्मग्रंथ आस्था और व्यवहार, धर्मशास्त्र और नैतिकता के लिए सर्वोच्च अधिकार है।

अन्य सभी स्रोत शास्त्र के अंतर्गत आते हैं। सोला स्क्रिप्टुरा का यही अर्थ है। ये अन्य स्रोत महत्वपूर्ण हैं, लेकिन केवल शास्त्र की व्याख्या करने में सहायक हैं और इनका मूल्यांकन शास्त्र, उच्चतम मानक के आधार पर किया जाना चाहिए।

यह सोला स्क्रिप्टुरा का सिद्धांत है। परंपरा। परंपरा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें दिखाती है कि अन्य ईसाइयों ने सनातन विषयों के बारे में क्या कहा है।

हम अपने आप धर्मशास्त्र नहीं बनाते। आप कहते हैं, ठीक है, एक मिनट रुको। नहीं, यह सिर्फ मैं और पवित्र आत्मा और बाइबल है।

आपने सही कहा। आपको खुद को उस प्रक्रिया में शामिल करना होगा। आप यह दावा नहीं कर सकते कि यह सिर्फ पवित्र आत्मा और बाइबल की वजह से है।

नहीं, आप एक इंसान हैं। आप बाइबल का अध्ययन करने में लगे हुए हैं। इसलिए आपकी बुद्धि इसमें शामिल है, चाहे आप इसे स्वीकार करें या पसंद करें या नहीं।

शुद्ध धर्मशास्त्र जैसी कोई चीज़ नहीं है, सिवाय इसके कि कोई इंसान इसका अध्ययन करे। दूसरे इंसानों, खास तौर पर हमसे पहले के लोगों के विचार जानने से बेहतर क्या हो सकता है? हम बाइबल उठाकर उसका अध्ययन करने वाले पहले व्यक्ति नहीं हैं।

अन्य लोग पहले भी ऐसा कर चुके हैं और हमारे लिए बहुत कुछ जानते हैं। परंपरा शास्त्र की ऐतिहासिक व्याख्या बताती है। यह चर्च की शिक्षाओं से संबंधित है, विशेष रूप से पंथों और स्वीकारोक्ति आदि में, झूठी शिक्षाओं को सही करती है और सैद्धांतिक मुद्दों पर ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

मैं त्रिएकत्व के सिद्धांत का आविष्कार करने की कोशिश की कल्पना भी नहीं कर सकता। एक पंथ में शामिल होने का यह कैसा निमंत्रण है। मैं रोमन कैथोलिक, लूथरन, सुधारवादी और प्रतीकात्मक दृष्टिकोणों से अलग प्रभु भोज का अध्ययन करने की कल्पना भी नहीं कर सकता।

मैं इसे समझ भी नहीं सकता क्योंकि ये ऐतिहासिक दृष्टिकोण हैं जिन्हें हमें प्रभु भोज की अपनी समझ की दिशा में काम करते समय समझने की आवश्यकता है। तर्क। तर्क महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमें रहस्योद्घाटन पर चिंतन करने में मदद करता है।

तर्क अवधारणाओं, प्रश्नों, रिश्तों और तर्कों को स्पष्ट करता है। ईश्वर को जानना हमारी क्षमताओं से परे है और इसके लिए विश्वास के साथ-साथ हमारी सभी मानसिक क्षमताओं की आवश्यकता होती है। हमें कठोर और स्पष्ट रूप से सोचने, झूठे द्वैधवाद को अस्वीकार करने, रिश्तों में सच्चाई देखने और प्रणालियों का विश्लेषण करने की आवश्यकता है।

इन कार्यों के लिए तर्क ही कुंजी है। मानव मस्तिष्क के बिना, तर्क के बिना धर्मशास्त्र प्राप्त करना संभव नहीं है। अनुभव।

हम ऐसा करने की संभावना कम रखते हैं और हममें से कई लोगों को अनुभव पर संदेह करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है। अनुभव हमारे लिए भी महत्वपूर्ण है। हमारा धर्मशास्त्र न केवल हमें आकार देता है, बल्कि हम जो हैं, उससे आकार लेता है।

जब हम धर्मशास्त्र को समग्र रूप से देखते हैं, जो हमारे विशेष आस्था अनुभवों, चर्च संदर्भों, पारिवारिक पृष्ठभूमि, जातीयताओं, संस्कृतियों, लिंगों और जीवन स्थितियों के लेंस के माध्यम से देखते हैं, तो अनुभव हमें शास्त्र की व्याख्या करने में मदद करने में एक भूमिका निभाता है। हम खुद को सांस्कृतिक संदर्भ से दूर नहीं कर सकते और संस्कृति-विहीन नहीं हो सकते। यह असंभव है।

यह बिलकुल असंभव है। हम या तो ईश्वर पर विश्वास करते हुए बड़े हुए हैं या ईश्वर पर सवाल उठाते हुए या ईश्वर पर विश्वास न करते हुए। और यह हमारे अनुभव का हिस्सा है और निश्चित रूप से यह इस बात को प्रभावित करता है कि हम ईश्वर और बाइबल को कैसे समझते हैं।

परंपरा, तर्क और अनुभव अच्छे और सार्थक स्रोत हैं। वे अच्छे मार्गदर्शक और शिक्षक हैं, लेकिन अचूक नहीं। परंपरा गलत हो सकती है।

गलातियों 1:6 से 9 देखें। गलातियों 2:11 से 21। तर्क रहस्य और परमेश्वर के प्रति समर्पण को भूल सकता है। 2 कुरिन्थियों 11:3 देखें। अनुभव को अनियंत्रित छोड़ा जा सकता है।

यहूदा की आयत 3 और 4 देखें। प्रत्येक का मूल्यांकन किया जाना चाहिए और प्रत्येक का उपयोग किया जाना चाहिए क्योंकि प्रत्येक हमें शास्त्र की व्याख्या करने में मदद करता है। लेकिन प्रत्येक का हमेशा शास्त्र द्वारा न्याय किया जाना चाहिए जिसका अधिकार परमेश्वर से आता है, न कि चर्च, तर्क या अनुभव से। चर्च वचन के अधीन खड़ा है, इसकी पुष्टि पर भरोसा करता है, इसके निर्णयों को स्वीकार करता है और इसकी आज्ञाओं का पालन करता है।

तो, धर्मशास्त्र के चार स्रोत हैं। अलग-अलग परंपराओं ने इसे अलग-अलग तरीकों से देखा है। परंपरागत रूप से, और वेटिकन ॥ ने वास्तव में इसमें कोई बदलाव नहीं किया है। रोमन कैथोलिक धर्म पवित्र शास्त्र और पवित्र परंपरा को महत्व देता है।

वे दोनों को संतुलित रखने का दावा करते हैं, लेकिन इंजील प्रोटेस्टेंट के लिए, ऐसा लगता है कि पवित्र परंपरा, पवित्र परंपरा, कभी-कभी पवित्र शास्त्र को मात दे देती है। जैसे कि, उदाहरण के लिए, शुद्धिकरण की शिक्षा, जो बाइबिल की शिक्षा नहीं है, बल्कि चर्च की पारंपरिक शिक्षा है, और यह एक ऐसी जगह होगी जहाँ रोमन कैथोलिक धर्मशास्त्र में परंपरा शास्त्र से अधिक महत्वपूर्ण है। शुद्धिकरण के लिए पारंपरिक शास्त्र प्रमाण पाठ अच्छा प्रमाण पाठ नहीं है।

वे बिल्कुल भी अच्छे प्रमाण पाठ नहीं हैं, और कुछ रोमन कैथोलिक व्याख्याकार आज भी इसे स्वीकार करते हैं। वेस्लेयन परंपरा वेस्लेयन चतुर्भुज को मानती है, जो शास्त्र, परंपरा, तर्क और अनुभव को संतुलित करने का प्रयास करती है। मैं स्वीकार करता हूँ कि हम इन चारों का उपयोग करते हैं, लेकिन मैं यह स्वीकार करने के पक्ष में हूँ कि हम इन चारों का उपयोग करते हैं, लेकिन फिर जानबूझकर और लगातार अपने विचारों, अपनी परंपरा और अपने अनुभव को पवित्र शास्त्र के अधीन करते हैं।

इसलिए, यह कहना पर्याप्त नहीं है कि मैं जानता हूँ कि यह मान्य है क्योंकि मैंने इसे किया; मैंने इसका अनुभव किया। नहीं, यह ईश्वर के वचन के अनुरूप होना चाहिए, या केल्विन ने इसे कहा है; इसलिए, यह सच होना चाहिए। नहीं, हम केल्विन, लूथर और वेस्ले सहित हर मानव शिक्षक का मूल्यांकन ईश्वर के वचन के अनुसार करते हैं, और फिर से, हम फ्रांसिस शेफ़र की शब्दावली का उपयोग करते हुए तर्कसंगत हैं, लेकिन तर्कवादी नहीं हैं।

इस अर्थ में, तर्कवाद, तर्क को शास्त्रों से ऊपर रखता है और विचारक को जो विचारक के तर्क के साथ मेल नहीं खाता है, उसे त्यागने के लिए जिम्मेदार है, लेकिन निश्चित रूप से, हम तर्कसंगत हैं। हम अपने दिमाग का इस्तेमाल करते हैं, हम इसमें मदद नहीं कर सकते। भगवान ने हमें दिमाग दिया है, हम बाइबल पढ़ते हैं, हम इसके बारे में सोचते हैं, हम निष्कर्ष निकालते हैं।

इसलिए, हमारे निष्कर्ष निकालने में परंपरा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योंकि हम अपने निष्कर्षों की तुलना चर्च के पिताओं और सुधारकों, प्रोटेस्टेंट रूढ़िवादी और आधुनिक धर्मशास्त्रियों के निष्कर्षों से करते हैं जो हमारे साथ शास्त्र के उच्च दृष्टिकोण को साझा करते हैं। निश्चित रूप से, हम उनसे सीख सकते हैं, इसलिए परंपरा का एक स्थान है, और हम इसे अपने जोखिम पर अनदेखा करते हैं। यदि हम परंपरा को पूरी तरह से अनदेखा करते हैं, तो हम शायद इतिहास की गलतियों और त्रुटियों को दोहराने के लिए खुद को समर्पित कर रहे हैं।

क्या अनुभव इतनी बड़ी भूमिका नहीं निभा सकता? निश्चित रूप से निभा सकता है, लेकिन एक बार फिर, अपने अनुभव को स्वीकार करते हुए और कैसे हमारी जीवन कहानियाँ, हम कैसे पले-बढ़े, हमारा चर्च जीवन और अनुभव, हमारे मित्र और अन्य, उन चीज़ों ने हमारे जीवन और हमारी सोच को कैसे प्रभावित किया है, हमें सचेत रूप से और निरंतर तरीके से अपने अनुभव, अपनी

परंपरा और अपने तर्क को परमेश्वर के वचन के अधीन करना चाहिए। मुझे वह शिक्षा पसंद नहीं है; मुझे मूल पाप पसंद नहीं है, कुछ लोग कहेंगे। मेरा मतलब है, आदम ने हम सभी को मुसीबत में डाल दिया; यह उचित नहीं है।

खैर, यहाँ दो अलग-अलग सवाल हैं। अगर बाइबल सिखाती है कि आदम के मूल पाप ने मनुष्यों को उसी तरह प्रभावित किया जैसा कि पारंपरिक धर्मशास्त्र ने कहा है, तो चाहे आप इसे पसंद करें, हम इसे पसंद करें या न करें, हम अपने तर्क और अपनी भावनाओं, अपनी भावनाओं को परमेश्वर के वचन के अधीन कर देते हैं और कहते हैं कि उत्पत्ति 3 अवसर देता है, पुराना नियम प्रभावों को दर्शाता है, रोमियों 5:12 से 21 में पॉल एक व्याख्या देता है जिसमें दिखाया गया है कि कैसे एक आदमी के एक पाप ने मानव जाति के लिए मृत्यु और निंदा ला दी। इसलिए सोला स्क्रिप्टुरा का मतलब यह नहीं है कि बाइबल ही हमारा अधिकार है। इसका मतलब है कि यह हमारा सर्वोच्च अधिकार है जो अन्य वैध अधिकारियों पर निर्णय लेता है जिनका हम सभी उपयोग करते हैं।

बेहतर होगा कि हम इसे पहचानें और फिर जानबूझकर धर्मग्रंथ को उचित स्थान दें, जो कि पहला स्थान है। ईश्वर और हमारी धर्मशास्त्रीय पद्धति, धर्मशास्त्र में हमारी प्रक्रिया को जानने के बारे में क्या ख्याल है? धर्मशास्त्र का अध्ययन करने की प्रक्रिया को धर्मशास्त्रीय पद्धति कहा जाता है। जब हम अध्ययन करते हैं, तो हम एक ठोस धर्मशास्त्रीय पद्धति का पालन करना चाहते हैं।

विकल्प हैं एक गलत तरीका या वास्तव में इसका अध्ययन करना बिना यह जाने कि हम किसी तरीके का अनुसरण कर रहे हैं। हमेशा, हम एक तरीका या तरीकों का अनुसरण कर रहे होते हैं। उनके बारे में सोचना कितना बेहतर है? फिर से तर्क की जगह है और उनका मूल्यांकन करना है जैसे हम धर्मशास्त्र करते हैं। धर्मशास्त्र में धर्मशास्त्रीय विधि या प्रक्रिया में बाइबिल की व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, विभिन्न अनुशासन, व्यवस्थित धर्मशास्त्र और फिर व्यावहारिक धर्मशास्त्र शामिल हैं।

हम वास्तव में व्याख्या करने से पहले एक छोटे से परिचय से शुरू करते हैं। हालाँकि इन तत्वों का एक बुनियादी क्रम है, लेकिन प्रत्येक अनिवार्य रूप से दूसरों के साथ जुड़ा हुआ है और उन्हें उनसे अलग करके संचालित नहीं किया जाना चाहिए। हमारे धर्मशास्त्र को विकसित करने की प्रक्रिया में प्रत्येक के लिए चिंता शामिल है, और हम इनमें से प्रत्येक दृष्टिकोण के माध्यम से काम करते हैं, लेकिन गणित की समस्या के अनुक्रम में नहीं।

ऑर्किस्ट्रा के सदस्यों की तरह, इनमें से प्रत्येक क्षेत्र हमारे धर्मशास्त्र को बनाने में भूमिका निभाता है। बाइबिल की व्याख्या बाइबिल में विभिन्न अंशों की व्याख्या से संबंधित है। बाइबिल धर्मशास्त्र बाइबिल की कहानी और इसकी कथानक के माध्यम से पता लगाता है क्योंकि हम सृष्टि, पतन, मोचन और पूर्णता का अनुसरण करते हैं।

ऐतिहासिक धर्मशास्त्र इन दोनों का अनुसरण नहीं करता है जिस तरह से बाइबिल धर्मशास्त्र व्याख्या का अनुसरण करता है। यह अतीत के विचारों से संबंधित है, जिस तरह से चर्च ने सदियों

से बाइबिल और इसकी शिक्षाओं को समझा है। इसलिए, यह व्याख्या और बाइबिल धर्मशास्त्र के लिए एक सीधी रेखा में नहीं खड़ा है, बल्कि एक कोण से आता है, लेकिन निश्चित रूप से इसे हमें परिप्रेक्ष्य देने, अतीत में अच्छे निष्कर्षों से सीखने में मदद करने और अतीत की गलतियों को दोहराने से बचने में मदद करने के लिए ध्यान में रखा जाना चाहिए।

अन्य विषय भी शामिल हैं, जिनका उल्लेख हम यहाँ आगे बढ़ते हुए करेंगे। व्यवस्थित धर्मशास्त्र, फिर, व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र के निष्कर्षों को एक सुसंगत पूरे में एक साथ रखने का एक मानवीय प्रयास है, शिक्षाओं को एक दूसरे के साथ संबंध में रखते हुए जब हम बाइबिल की शिक्षाओं के आकार को पूरी तरह से समझने की कोशिश करते हैं। इसलिए, हम कह सकते हैं कि शास्त्र सिखाता है कि शाश्वत पुत्र अपने अवतार में एक मानव बन गया और अब से एक व्यक्ति में ईश्वर और मनुष्य है।

फिर, व्यवस्थित विज्ञान से, बेशक, व्यावहारिक धर्मशास्त्र को कई क्षेत्रों में लागू किया जाना चाहिए। उपदेश, शिक्षण, परामर्श और मिशन तुरंत दिमाग में आते हैं। क्योंकि हम सभी पहले से मौजूद, यहाँ तक कि अविकसित मान्यताओं के साथ बाइबल का अध्ययन करते हैं, जिसमें धार्मिक मान्यताएँ भी शामिल हैं, इसलिए बाइबल की शिक्षाओं का अध्ययन करने की हमारी पद्धति की जाँच करना अच्छा है।

इसने कुछ संशयवादियों को सभी व्याख्याओं को निराशाजनक रूप से परिपत्र मानने के लिए प्रेरित किया है जैसे कि हमारी वर्तमान मान्यताएँ हमारे अध्ययन को पूरी तरह से नियंत्रित करती हैं। हम सहमत हैं कि सभी व्याख्याएँ और धर्मशास्त्र व्याख्याकारों द्वारा किए जाते हैं, वे लोग जो बाइबिल के ग्रंथों को पहले से मौजूद धर्मशास्त्र के साथ और कभी-कभी उसकी ओर पढ़ते हैं। हममें से कोई भी व्यक्ति साफ स्लेट, एक खाली स्लेट के साथ अंशों तक नहीं पहुँचता है।

बाइबल और हमारे धर्मशास्त्र को पढ़ने के लिए, हम सभी ईश्वर, स्वयं, बाइबल, यीशु, उद्धार, चर्च, इतिहास, जीवन के अर्थ और चीजें कैसे काम करती हैं, इस पर दृष्टिकोण लाते हैं। ये दृष्टिकोण हमें धर्मशास्त्र को समझने के लिए सुविधाजनक बिंदुओं के रूप में बहुत अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, उत्पीड़न के तहत ईसाई अक्सर अधिक स्पष्ट रूप से देखेंगे और अपने लोगों के साथ ईश्वर की उपस्थिति, बुराई पर ईश्वर की अंतिम जीत और ईश्वर के न्याय के बाइबिल विषयों को अधिक पूरी तरह से एकीकृत करेंगे।

हमारे परीक्षण अक्सर हमारे धर्मशास्त्र को बेहतर बनाते हैं। जैसे-जैसे हमारी यात्रा में संघर्षों द्वारा इसका परीक्षण होता है, हमारा धर्मशास्त्र परिपक्व होता जाता है। सताए गए लोगों का उल्लेख मुझे एक मिशन प्रोफेसर की याद दिलाता है जो मेरा सहकर्मी था।

उनका नाम नेल्सन जेनिंग्स था, और उन्होंने मुझे कई बातें सिखाईं, जिनमें से एक यह है कि बाइबल की सही व्याख्या करने के लिए हमें पूरे चर्च की ज़रूरत है। यानी, उत्पीड़न के दौर से गुज़र रहे ईसाई उन लोगों की मदद कर सकते हैं जो उत्पीड़न के दौर से नहीं गुज़र रहे हैं, ताकि वे बाइबल के उन अंशों को बेहतर तरीके से समझ सकें जो उत्पीड़न के बारे में बताते हैं। यह बहुत मायने रखता है।

इससे हमें विनम्र होना चाहिए और हमें उत्पीड़न के बारे में केवल सरल और आसान बातें कहने से रोकना चाहिए, बिना उन लोगों का सम्मान किए जो इसके बीच में उन अंशों को समझने की कोशिश कर रहे हैं। बाइबल की शिक्षा प्राप्त करने के लिए, हमें पूरे चर्च की शिक्षा को समझना चाहिए। इसका मतलब है, अपने आप में, पूरे चर्च की शिक्षा को ऐतिहासिक रूप से समझना ऐतिहासिक धर्मशास्त्र या सिद्धांत के इतिहास का मामला है।

लेकिन अगर हम अपने दृष्टिकोण को अपनी व्याख्यात्मक कुंजी बनने देते हैं, तो गलतियाँ होंगी। कुछ लोग बाइबल की कहानी और विश्वदृष्टि से अलग दृष्टिकोण से शास्त्र की व्याख्या करते हैं। यह शुरू से ही त्रुटिपूर्ण है।

व्याख्या के प्रति ऐसे आलोचनात्मक बाहरी दृष्टिकोण अक्सर साम्राज्यवादी होते हैं और बाइबिल के ग्रंथों की उनकी प्रकल्पित धर्मशास्त्र से आलोचना करने या उन ग्रंथों को उस विचारधारा के अनुरूप बनाने का इरादा रखते हैं। किसी ग्रंथ की उनकी प्रकल्पित विचारधारा से व्याख्या करना या किसी ग्रंथ को उनकी विचारधाराओं के अनुरूप बनाना। यह भजन 119 के दृष्टिकोण के विपरीत है, जिसमें शास्त्र को विनम्र श्रोताओं के रूप में पढ़ा जाता है, जैसा कि हमने देखा, जो परमेश्वर के निर्देश प्राप्त करते हैं, मेहनती साधक के रूप में अपने पूरे दिल से प्रभु की आज्ञाओं को खोजते हैं, वफादार सेवक के रूप में जो उनके अधिकार को स्वीकार करते हैं, उनकी इच्छा का पालन करते हैं और उनकी सलाह पर ध्यान देते हैं, परखे हुए यात्रियों के रूप में जो शत्रुतापूर्ण दुनिया में प्रवासी के रूप में विरोध का सामना करते हैं और जिन्हें वचन से ज्ञान की सख्त जरूरत है, समुदाय में परमेश्वर के लोग के रूप में, एक दूसरे से प्रोत्साहन पाते हुए, परमेश्वर के मार्गों पर एक साथ चलते

भजन 119, श्लोक 54. अपने दृष्टिकोण को व्याख्यात्मक कुंजी के रूप में काम करने देना एक और संभावित गलती की ओर ले जाता है। परमेश्वर के वचन की हमारी व्याख्या को परमेश्वर के वचन के साथ ही बराबर मान लेना।

हम अभी भी प्रगति पर हैं। और इसका मतलब है कि हमारा धर्मशास्त्र हमेशा निर्माणाधीन है। यह परमेश्वर के वचन के बारे में जो हम वर्तमान में जानते हैं, उसी पर आधारित है और इसमें हमेशा सुधार किया जा रहा है।

परमेश्वर के वचन के अनुसार, हमने पहले ही सोला ग्रेटिया, सोला फ़ाइडेई, सोलस क्राइस्टस, सोला ग्लोरिया देओ, यानी परमेश्वर की महिमा का उल्लेख किया है। हमने सोला स्क्रिप्टुरा से शुरुआत की। अगर आप चाहें तो हम बाद में सुधार का नारा भी जोड़ सकते हैं।

सुधार करते रहना। इस संबंध में, हमारा धर्मशास्त्र कभी भी अपने सभी विवरणों में तय नहीं होता है। ओह, नींव रखी गई है, और कैथोलिक, यानी सार्वभौमिक और ऐतिहासिक सिद्धांतों पर सहमति बनी है।

लेकिन हर आयत की हर व्याख्या पर सहमति नहीं होती। और निश्चित रूप से हम परमेश्वर के वचन से नई रोशनी सीख सकते हैं। हमारा धर्मशास्त्र परमेश्वर के वचन के बारे में जो हम वर्तमान में जानते हैं, उसी पर आधारित है और इसमें हमेशा सुधार किया जा रहा है।

हमेशा सुधारा जाए, परमेश्वर के वचन के अनुसार, ऐसा ही हो। इसलिए, हम अपने आप को और अपने विचारों को अपनी बाइबिल व्याख्या में लाते हैं, लेकिन इससे संदेह नहीं होता। हमारा प्रारंभिक बिंदु हमारे मार्ग को आकार देता है, लेकिन अंततः यह हमारे गंतव्य को निर्धारित नहीं करता है।

बेहतर तरीका यह है कि हम अपनी पहले से मौजूद धार्मिक मान्यताओं को स्वीकार करें और समझें, आत्मा की रोशनी के लिए प्रार्थना करें, चर्च की बुद्धि से सीखें और परंपरा, तर्क और अनुभव, जिसमें हमारे शुरुआती दृष्टिकोण भी शामिल हैं, पर सर्वोच्च अधिकार के रूप में शास्त्रों पर भरोसा करें। अगर हम इस दृष्टिकोण का पालन करते हैं, तो एक बहुत ही वास्तविक अर्थ में हर बार जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं, तो हमारे व्याख्यात्मक धार्मिक लेंस को थोड़ा-बहुत ही सही तरीके से बदला जा सकता है। पर्याप्त समय दिए जाने पर, इससे बेहतर धार्मिक दृष्टिकोण और बढ़ी हुई व्याख्यात्मक सटीकता हो सकती है, जिससे और भी बेहतर धार्मिक दृष्टिकोण और तेजी से विकसित और ठोस व्याख्याएँ हो सकती हैं।

इस प्रकार, एक हेर्मेनेयुटिकल चक्र, एक दुष्चक्र जिसका कोई अंत नहीं, कोई शुरुआत नहीं, और कोई सुधार नहीं, की धारणा अनावश्यक है। एक दुष्चक्र व्यक्ति को भ्रम, व्यक्तिपरकता और अनिश्चितता की ओर ले जाता है। धर्मशास्त्र की बाइबिल व्याख्या के लिए एक ठोस दृष्टिकोण में, एक हेर्मेनेयुटिकल सर्पिल है, जो इसी नाम से ग्रांट ओसबोर्न की पुस्तक का संदर्भ है।

यहां तक कि धार्मिक सर्पिल या हमारे सिम्फोनिक रूपक में भी, चाहे हमारे उपकरण कितने भी बेसुरे क्यों न हों, हम उन्हें एक मानक के अनुसार ट्यून कर सकते हैं। इस तरह की ट्यूनिंग में थोड़ा समय लग सकता है, लेकिन यह हो सकता है। इसी तरह, जैसे-जैसे हम मानक के रूप में ईश्वर और शास्त्र में उनके आत्म-प्रकाशन को अपनाते हैं, अपनी स्वयं की धारणाओं और पूर्वाग्रहों को पहचानते हैं, लगातार ईश्वर के वचन को पढ़ते हैं और ध्यान से उसका अध्ययन करते हैं, और चर्च की बुद्धि को सुनते हैं, हमारा धर्मशास्त्र परिपक्व होता है, धीरे-धीरे सत्य की ओर बढ़ता है।

आइए चर्च के इतिहास से एक आवाज़ पर विचार करें, वह है विलियम टिंडेल की आवाज़। टिंडेल, हम उनकी सटीक तिथियों के बारे में नहीं जानते, लेकिन उनका जन्म 1494 के आसपास हुआ था और 1536 के आसपास उनकी शहादत हुई थी। वह एक अंग्रेजी विद्वान और प्रमुख सुधारवादी व्यक्ति थे जिन्होंने बाइबिल का हिब्रू और ग्रीक से अंग्रेजी में अनुवाद किया था।

उन्होंने प्रसिद्ध रूप से कहा, उद्धरण, उद्धरण, मैं एक ऐसे लड़के को प्रेरित करूंगा जो हल चलाता है, शास्त्रों के बारे में पोप से भी अधिक जानता है, उद्धरण बंद करें। 1536 में, उन्हें बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए दोषी ठहराया गया और उन्हें मार दिया गया। टिंडेल बाइबिल ने इंग्लैंड में सुधार विचारों को फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

और 1611 के किंग जेम्स बाइबिल को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया। न्यू टेस्टामेंट का व्याख्या में अनुवाद करने में टिंडेल का उद्देश्य क्या है? उद्धरण, क्योंकि मैंने अनुभव से महसूस किया था कि आम लोगों को किसी भी सत्य में स्थापित करना असंभव था, सिवाय इसके कि

शास्त्रों को उनकी मातृभाषा में उनकी आँखों के सामने स्पष्ट रूप से रखा जाए, ताकि वे पाठ की प्रक्रिया, क्रम और अर्थ देख सकें। इसलिए, वह बाइबिल का अंग्रेजी में अनुवाद करने के लिए प्रेरित हुआ, भले ही अंततः उसके जीवन की कीमत चुकानी पड़ी, क्योंकि रोम नहीं चाहता था कि लोगों को उनकी मातृभाषा में बाइबिल तक पहुँच मिले।

सभी अच्छे धर्मशास्त्र की नींव बाइबिल के अंशों के अर्थ को समझना है, जो पाठ के माध्यम से बाइबिल के लेखक के इरादे से शुरू होता है। ऐसे कई सहायक उपकरण हैं जो हमें ऐसे अंशों के अर्थ को समझने में सहायता कर सकते हैं, जिनमें अच्छी अध्ययन बाइबलें, बाइबल शब्दकोश और टिप्पणियाँ शामिल हैं। इनमें से कुछ उपकरणों में ESV, सिस्टमैटिक थियोलॉजी स्टडी बाइबल, NIV ज़ोंडरवन स्टडी बाइबल, धर्मशास्त्रीय शब्दों का एक संक्षिप्त शब्दकोश, और इसी तरह के अन्य शामिल हैं।

किसी अंश का अध्ययन करते समय, हमें विशेष साहित्यिक शैली, कथा, कहावत, दृष्टांत, सुसमाचार, पत्र आदि पर ध्यान देना चाहिए, और उस शैली के लिए उपयुक्त साहित्यिक रणनीतियों पर विचार करना चाहिए। साहित्यिक संदर्भ भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि किसी भी दिए गए अंश का स्थान हमें यह समझने में सहायता करता है कि बाइबल के लेखक का क्या मतलब है। किसी शब्द का अर्थ अक्सर उसके आस-पास के वाक्यांशों, खंडों और वाक्यों में उसका अध्ययन करने से उभरता है।

वाक्य का अर्थ उसके पैराग्राफ या दृश्यों में प्रकट होता है, और दृश्य का अर्थ आस-पास के प्रकरणों, खंडों या समग्र पुस्तक में उभर कर आता है। ऐतिहासिक सेटिंग भी रचनात्मक होती है क्योंकि पाठ के अवसर, प्राप्तकर्ता, लेखक और चर्च के संदर्भ को जानने से अच्छी व्याख्या को बढ़ावा मिलता है। यहाँ भी, गलतियों से बचना चाहिए।

हम उनमें से दो का उल्लेख करेंगे जो धर्मशास्त्रीय व्याख्या से संबंधित हैं। सबसे पहले, कभी-कभी पाठक किसी विशेष विषय या सिद्धांत को खोजने पर इतने केंद्रित होते हैं कि वे किसी अंश में वह पढ़ सकते हैं जो वहाँ नहीं है। इस प्रलोभन से बचने की कुंजी यह है कि पहले अंशों को इस उद्देश्य से पढ़ें कि वे क्या संप्रेषित करना चाहते हैं और उसके बाद ही विचार करें कि किसी का सिद्धांत उन अंशों से कैसे संबंधित है।

दूसरा, पाठक गलती से केवल उन अंशों पर ध्यान दे सकते हैं जिनमें लेखक स्पष्ट रूप से किसी धार्मिक मुद्दे के बारे में निर्देश देता है। याद रखें कि बाइबल के लेखक धार्मिक विश्वासों और धार्मिक इरादों से लिखते हैं, और जबकि विशेष सिद्धांत हमेशा किसी दिए गए अंश का प्राथमिक लक्ष्य नहीं होते हैं, लेखक धर्मशास्त्र सिखा रहे हैं ताकि परमेश्वर के लोग उचित रूप से परमेश्वर का अनुसरण कर सकें, भले ही जोर नैतिकता पर हो और धर्मशास्त्र नैतिकता का एक आधार हो। इसलिए, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, अच्छा धर्मशास्त्र बाइबल की व्याख्या पर आधारित है।

हमें भ्रम की अवधारणा से भी बचना चाहिए, जो कहती है कि किसी विशेष सिद्धांत को रखने के लिए कुछ शब्दों का मौजूद होना ज़रूरी है। इसलिए, पौलुस को चर्च के सिद्धांत के बारे में

सिखाने के लिए चर्च या एक्लेसिया शब्द का इस्तेमाल करना चाहिए। यह स्पष्ट रूप से एक भ्रम है क्योंकि वह कभी-कभी चर्च शब्द का इस्तेमाल किए बिना चर्च के बारे में सिखाता है।

उदाहरण के लिए, जब वह सिखाता है कि परमेश्वर के लोग वास्तव में परमेश्वर के लोग हैं, तो वह चर्च के बारे में बात करता है। चर्च शब्द का उपयोग किए बिना परमेश्वर के लोगों के बारे में अंश चर्च के सिद्धांत के लिए प्रासंगिक हैं। और परमेश्वर के पुत्र ने चर्च से प्रेम किया और उसके लिए खुद को दे दिया।

चर्च शब्द का प्रयोग किया गया है, लेकिन वह अच्छा चरवाहा भी है जो अपनी भेड़ों से प्यार करता है और उसकी भेड़ें हैं, अन्य भेड़ें हैं जिन्हें उसे भेड़शाला में लाना चाहिए, इत्यादि। जहाँ तक मेरी जानकारी है, जॉन 10 में चर्च का कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन चर्च के सिद्धांत से संबंधित शिक्षा चर्च के शब्द के बिना भी है। चर्च पवित्र आत्मा का मंदिर है।

फिर से, आपको उस अवधारणा को समझने के लिए चर्च शब्द की आवश्यकता नहीं है। कोई व्यक्ति इसी तरह से कह सकता है, अवधारणा शब्द की भ्रांति को स्वीकार करते हुए जॉन के सुसमाचार में चुनाव या पूर्वनियति का उल्लेख ही नहीं है। इसमें कभी भी चुने हुए, चुनाव, पूर्वनियति या पूर्वनियति शब्द का उपयोग नहीं किया गया है।

यह सच है। इसमें उन शब्दों का इस्तेमाल नहीं किया गया है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि यह अवधारणा मौजूद नहीं है। और यूहन्ना तीन विषयों का इस्तेमाल करता है जो चुनाव या पूर्वनियति के सिद्धांत को दर्शाते हैं।

पिता लोगों को पुत्र को सौंपता है। यूहन्ना 17 में, हम उस अवधारणा को चार बार पढ़ते हैं, और यह निश्चित रूप से ईश्वरीय चुनाव से संबंधित है। पूरे शास्त्र में अद्वितीय रूप से, केवल यूहन्ना 15 आयत 16 और 19 पुत्र को चुनाव का लेखक बताते हैं।

तूने मुझे नहीं चुना। मैंने तुझे इसलिये चुना है कि तू जाकर फल लाए, ताकि तेरा फल बना रहे। संसार तुझ से बैर करेगा, क्योंकि मैं ने तुझे संसार में से चुन लिया है।

क्या इसे शिष्यत्व के लिए मात्र एक विकल्प के रूप में नहीं माना जा सकता है, जैसा कि यूहन्ना 6:66 में कहा गया है, क्या मैंने तुम 12 को नहीं चुना है, और तुम में से एक शैतान है? यह स्पष्ट है कि यीशु का चुनाव शिष्य बनना है, उद्धार का चुनाव नहीं। नहीं, क्योंकि यूहन्ना 15 में, चुनाव यीशु से संबंधित होना है और अब संसार से संबंधित नहीं होना है। पहले यूहन्ना 6 संदर्भ से पता चलता है कि लोगों को यीशु द्वारा चुना गया था, लेकिन वे अभी भी संसार से संबंधित हैं।

आप में से एक, यहूदा का जिक्र करते हुए, शैतान है। लेकिन यहाँ यूहन्ना 15 में, यीशु का चुनाव उद्धार के लिए एक चुनाव है क्योंकि चुने हुए लोग उसके हैं न कि संसार के। पिता लोगों को पुत्र को देता है, यूहन्ना 15:16 और 19 में पुत्र चुनाव के लेखक के रूप में, और परमेश्वर के लोगों की पूर्व या पूर्ववर्ती पहचान के रूप में।

आमतौर पर, यूहन्ना कहता है, तुम बचाए नहीं गए हो; तुम मेरी भेड़ नहीं हो क्योंकि तुम उस पर विश्वास नहीं करते जो यीशु कह सकता था। यूहन्ना 10 में, यीशु ने इसे उलट दिया और कहा, तुम विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ नहीं हो। जैसा कि हम यूहन्ना के सुसमाचार को पढ़ते हैं, मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं।

यीशु उसी अध्याय 10 में कहते हैं, वे मेरा अनुसरण करते हैं, मैं उन्हें अनंत जीवन देता हूँ, वे कभी नाश नहीं होंगे। भेड़ें हैं, और मैं उन्हें बकरी कहूँगा इससे पहले कि वे विश्वास करें या न करें। मैं इसे फिर से कहूँगा: यह इस तथ्य को नकार नहीं देता कि विश्वास करना ही उद्धार का तरीका है।

हालाँकि, यह भी कम संख्या में विचार है कि लोग विश्वास करने से पहले भेड़ या बकरी होते हैं, और उनका विश्वास करना या न करना भेड़ या बकरी के रूप में उनकी पूर्ववर्ती या पूर्व पहचान को प्रकट करता है। इस प्रकार, यूहन्ना का अपना सुसमाचार यह कहने की भ्रांति को दर्शाता है कि किसी व्यक्ति के पास किसी विशेष सिद्धांत को सिखाने के लिए एक विशेष शब्द या शब्द होने चाहिए क्योंकि यूहन्ना में चुनाव और चुने हुए, पूर्वनियति और पूर्वनियति का अभाव है। लेकिन फिर भी, उन तीन छवियों के साथ, पिता लोगों को यह पुत्र को देता है, पुत्र चुनाव का लेखक है, और परमेश्वर के लोगों की पूर्ववर्ती पहचान, ऐसे अंश हैं जो चुनाव के सिद्धांत से संबंधित हैं।

यदि आप इस पर अधिक देखना चाहते हैं, डीए कार्सन, यह एक बड़ी पुस्तक है, दिव्य संप्रभुता और मानवीय जिम्मेदारी, तनाव में बाइबिल के दृष्टिकोण। इसलिए, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण, अच्छा धर्मशास्त्र बाइबिल की व्याख्या पर आधारित है। बाइबिल धर्मशास्त्र में, अंततः, प्रत्येक बाइबिल मार्ग का संदर्भ न केवल उसकी विशेष पुस्तक है, बल्कि संपूर्ण कैनेन भी है, जो बाइबिल के ग्रंथों को ईश्वर की प्रकट योजना में रखता है जो सृष्टि और पतन से मुक्ति और नई सृष्टि की ओर बढ़ता है।

यह बाइबिल की कहानी सिद्धांतों को फ्रेम करती है, आदेश देती है और जोड़ती है। इसके अलावा, यह मसीह के व्यक्तित्व और कार्य में परिणत होती है, जो सुसमाचारों, इब्रानियों 1, 1 से 4 से पहले और बाद में आने वाली चीजों को अलग करती है। इसलिए, हमारे लिए यह बुद्धिमानी है कि हम बाइबिल की कहानी के भीतर अंशों का पता लगाएँ और उन्हें विषय पर अन्य अंशों से भी जोड़ें। हम देखते हैं कि बाइबिल की कहानी पुराने नियम में बाइबिल की वाचाओं के माध्यम से कैसे विकसित होती है, विशेष रूप से कानून, भविष्यद्वक्ताओं और लेखन में, साथ ही नए नियम में, नई वाचा के उदय में, विशेष रूप से सुसमाचार, प्रेरितों के काम, पत्र और रहस्योद्घाटन में।

हमारा ध्यान न केवल उन विशिष्ट सिद्धांतों पर होना चाहिए जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं, बल्कि बाइबल की प्रत्येक पुस्तक के केंद्रीय विषयों और संपूर्ण बाइबल में केंद्रीय विषयों पर भी होना चाहिए: वाचा, राज्य, प्रायश्चित, महिमा, प्रेम, पवित्रता, आदि। यह हमें अध्ययन किए जा रहे सिद्धांत के इन और अन्य प्रमुख विषयों से संबंधों को देखने में सक्षम करेगा, जो हमें मसीह के प्रकाश में अनुपात और प्रकाश में इसके संबंधों में सिद्धांत को समझने और संश्लेषित करने में सक्षम करेगा। इस प्रकार, अच्छा धर्मशास्त्र बाइबिल की व्याख्या पर आधारित है और बाइबिल धर्मशास्त्र में निहित है।

तो, अगर आप मुझसे पूछें, क्या मैं स्वतंत्र इच्छा में विश्वास करता हूँ? मेरा जवाब हाँ होगा, लेकिन यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप बाइबिल की कहानी में क्या बात कर रहे हैं। क्योंकि पतन से पहले और पतन के बाद आदम और हव्वा की स्वतंत्र इच्छा में अंतर है। बचाए नहीं गए लोगों और बचाए गए लोगों की इच्छा की स्वतंत्रता में अंतर है।

और निश्चित रूप से वर्तमान में बचाए गए लोगों और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में बचाए गए लोगों के बीच इच्छा की स्वतंत्रता में अंतर है। हमारे पास हमेशा चुनाव की स्वतंत्रता होगी। लेकिन सच्ची स्वतंत्रता चुनाव की स्वतंत्रता से कहीं बढ़कर है।

सच्ची आज़ादी परमेश्वर को जानना, उससे प्रेम करना और उसकी सेवा करना है। आदम और हव्वा के पास पतन से पहले दोनों ही चीज़ें थीं। चुनाव की आज़ादी और मानवता का निरंतर साथी और सच्ची आज़ादी।

वे परमेश्वर को जानते थे, उससे प्रेम करते थे और उसकी सेवा करते थे। यह रहस्यपूर्ण है कि वे क्यों गिरे, लेकिन वे गिरे। बेशक, उन्होंने चुनाव की स्वतंत्रता बरकरार रखी, जो मनुष्य के पास हमेशा से रही है, लेकिन उन्होंने नैतिक स्वतंत्रता और परमेश्वर को प्रेम करने, उसकी सेवा करने और उसके उद्धारक अनुग्रह के अलावा उसे जानने की क्षमता खो दी।

जब लोग बचाए जाते हैं, तो बेशक उनके पास चुनाव की आज़ादी होती है। हमारे पास हमेशा यह आज़ादी होती है। लेकिन वे नैतिक आज़ादी या परमेश्वर से प्रेम करने, उसकी सेवा करने, उसका आदर करने और उसकी आज्ञा मानने की क्षमता को फिर से हासिल कर लेते हैं।

हालाँकि, इस जीवन में पूरी तरह से नहीं। केवल अंतिम समय में, केवल मृतकों में से जी उठने के बाद नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में, हमारे पास चुनाव की अविभाज्य स्वतंत्रता होगी, लेकिन साथ ही साथ अपने पूर्ण अर्थों में सच्ची स्वतंत्रता भी होगी, जहाँ हम ईश्वर का अपमान करने, उनकी अवज्ञा करने या उन पर विश्वास न करने में असमर्थ होंगे। इस प्रकार, स्वतंत्रता का सार विपरीत चुनने की क्षमता नहीं है, बल्कि यह ईश्वर को जानना, उनसे प्रेम करना और उनकी सेवा करना है।

तो यहाँ एक उदाहरण है जहाँ बाइबिल धर्मशास्त्र, सृष्टि में इच्छा की स्वतंत्रता और स्वतंत्र चुनाव पर विचार करते हुए, पतन में, मसीह में, और अंतिम बात, नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में, इच्छा की स्वतंत्रता की अवधारणा की हमारी समझ को बहुत प्रभावित करता है। ऐतिहासिक धर्मशास्त्र। हमारी प्रवृत्ति व्यक्तिगत रूप से बाइबिल पढ़ने की हो सकती है, इसे निजी तौर पर पढ़ना ताकि ईश्वर के बारे में जान सकें और व्यक्तिगत रूप से उसका बेहतर तरीके से पालन कर सकें।

जबकि यह अच्छा है, हमें चर्च और चर्च के इतिहास की व्याख्यात्मक प्रक्रिया में केंद्रीयता पर भी विचार करना चाहिए। चर्च शास्त्र का ऐतिहासिक व्याख्याकार रहा है। जबकि ऐतिहासिक चर्च की शिक्षाएँ और पंथ विश्वासियों पर उसी तरह अधिकार नहीं रखते हैं जिस तरह अकेले शास्त्र हैं, वैसे ही शास्त्र भी हैं।

व्याख्या के आधुनिक और उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोणों ने कभी-कभी ऐतिहासिक चर्च शिक्षाओं की कीमत पर व्यक्तिगत व्याख्याकार, आधुनिक या समकालीन पाठकों के समुदायों, उत्तर-

आधुनिक को उजागर किया है। हम बाइबल पढ़ने वाले पहले व्यक्ति नहीं हैं, लेकिन हम सदियों से ईश्वर के लोगों की धारा में खड़े हैं और चर्च के इतिहास, चर्च के इतिहास के प्रमुख विचारकों, यानी एथनासियस, ऑगस्टीन, थॉमस एक्विनास, मार्टिन लूथर, जॉन कैल्विन, जॉन ओवेन, जोनाथन एडवर्ड्स, जॉन वेस्ले जैसे ऐतिहासिक धर्मशास्त्र से बहुत कुछ सीख सकते हैं। हमें चर्च की ऐतिहासिक विचारधारा से बहुत हिचकिचाहट के साथ और केवल तभी अलग होना चाहिए जब पवित्र शास्त्र और स्पष्ट कारण से धर्मशास्त्रीय रूप से आश्वस्त हो।

हमें अपने वर्तमान चर्च समुदाय के संदर्भ में भी पवित्रशास्त्र को पढ़ना चाहिए, यह समझते हुए कि पवित्रशास्त्र अन्य विश्वासियों के साथ हमारे जीवन का मार्गदर्शन करता है। इस प्रकार, अच्छा धर्मशास्त्र ऐतिहासिक चर्च शिक्षाओं के संबंध में और साथ में जीवन में चर्च द्वारा, उसके साथ और उसके लिए किया जाता है। व्यवस्थित धर्मशास्त्र बाइबिल व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र में हमारे काम पर आधारित है, और हम एक धार्मिक संश्लेषण की ओर आगे बढ़ते हैं।

हम प्राथमिक बाइबिल विषयों को शामिल करना चाहते हैं, केंद्रीय धार्मिक विषयों को संबोधित करना चाहते हैं, और सिद्धांतों के बीच प्राथमिकताओं और अंतर्संबंधों को दिखाना चाहते हैं। इस तरह के धर्मशास्त्र को बाइबिल की कहानी के प्रकाश में सबसे अच्छी तरह से व्यवस्थित और संप्रेषित किया जाता है: सृजन, पतन, मोचन और नई रचना। हम अपने धर्मशास्त्र को ऐसे तरीके से व्यक्त करना चाहते हैं जो प्रासंगिक, स्पष्ट और दूसरों के लिए फायदेमंद हो।

जब हम कथानक पर विचार करते हैं, विशेष रूप से व्यवस्थित विज्ञान पर लागू होता है, तो यह केवल सृजन, पतन, मुक्ति और नई सृष्टि नहीं है, बल्कि यह ईश्वर, रहस्योद्घाटन, सृजन, मानवता, पतन, इस्राएल, मसीह का व्यक्तित्व, मसीह का कार्य, पवित्र आत्मा, उद्धार, चर्च और अंतिम चीजें हैं। व्यावहारिक धर्मशास्त्र अनुप्रयोग। हमने जो कहा है वह हमारी ऐतिहासिक, हमारी धर्मशास्त्रीय पद्धति है, क्षमा करें, इसमें बाइबिल की व्याख्या, बाइबिल धर्मशास्त्र और ऐतिहासिक धर्मशास्त्र शामिल हैं, जो सभी व्यवस्थित धर्मशास्त्र की ओर ले जाते हैं।

लेकिन यह अंत नहीं है। इसमें व्यावहारिक धर्मशास्त्र और अनुप्रयोग दोनों शामिल हैं। धर्मशास्त्र तब तक अधूरा है जब तक कि इसे चर्च में नहीं जिया जाता।

ईश्वर हमारे विश्वासों और हमारे जीवन की संपूर्णता को बेहतर बनाने के लिए धर्मशास्त्र का उपयोग करता है। तदनुसार, हम समकालीन चर्च में इसके मूल उद्देश्य के प्रकाश में बाइबिल की सच्चाइयों को लागू करने का प्रयास करते हैं। इसलिए प्रेम, विश्वास, प्रार्थना, सुसमाचार प्रचार, शिष्यत्व, संगति, सेवकाई, आराधना, विवाह, पालन-पोषण, मित्रता, आतिथ्य, क्षमा, वित्त, उपदेश, शिक्षण, मिशन, चर्च नियोजन, इत्यादि के प्रति हमारा दृष्टिकोण ऐसे अनुप्रयोगों से प्रवाहित होता है।

इस प्रकार धर्मशास्त्र हम में से प्रत्येक और समग्र रूप से चर्च को होने, प्रेम करने, सोचने, विश्वास करने और अनुसरण करने के स्पष्ट तरीकों के लिए बुलाता है। बाइबिल की कहानी हमारी कहानी है। वास्तव में, यह हर ईसाई कहानी है।

ईश्वर के लोगों के रूप में, हम उससे निकले हैं, उसके द्वारा परिभाषित हैं, और उसके विस्तार हैं क्योंकि हम ईश्वर और दूसरों की भलाई और उसकी महिमा के लिए जीते हैं, उनसे प्रेम करते हैं और उनकी सेवा करते हैं। हमारे अगले व्याख्यान में, हम ईश्वर के रहस्योद्घाटन के विवरणों पर विचार करना शुरू करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा रहस्योद्घाटन और पवित्र शास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 4 है, ईश्वर को जानना और धर्मशास्त्र के स्रोत।